PRESS RELEASE 23-8-94

ON 23 August '94, a ~~memorandum~~ memorandum was submitted to the President, Shri S.D. Sharma, by several women's organisations, health groups, and democratic rights groups, appealing to him to ensure the inclusion of recommendations and suggestions made by ~~the~~ them ~~in~~ to the Pre-Natal Diagnostic Techniques (Regulation and Prevention of Misuse) Bill, (Bill no. 155 of 1991). The President was requested to withhold his assent to the Bill and send it back to the Parliament for reconsideration and incorporation of recommendations made therin.

Progressive women's and social organisations throughtout the country had for long been dmanding a legislation to prevent the misuse of techniques such as amniocentecis and ultrasonography, for sex-determination and the subsequent abortion of female foetuses. On 27 July '94, the Parliament passed the Prenatal Diagnostic Techniques (Regulation and Prevention of Misuse) Bill. The signatories to the memorandum ~~are~~ viz . Action India, All India Progressive Womens Organisation, Aids Bhedbhav Virodhi Andolan, Ankur, Forum Against Sex-Determination and Sex Preselection (Bombay), Jagori, Joint Women's Programme, Mahila Samooh (Ajmer), Peoples Union for Democratic Rights, Sabla Sangh, Saheli and Voluntary Health Association of India, are deeply concerned to see that the Bill does no more than pay lip service to its professed objective, and is incapable of tackling the menace of female foeticide. The recommendations submitted to the Joint Parliamentary Committee in Jan. 1992 by groups actively campaigning on the issue have been largely ignored. The memorandum highlights some of the vital recommendations which must be incorporated, and urges the President to ensure that the Bill is speedily processed. The recomendations (main ones) are :

(1) Future techniques of sex-determination, as well as sex- pre-selection should be brought within the ambit of the Act. (2) The pregnant woman who undergoes the test should be presumed to be absolutely innocent, as she is a victim of the gender bias existing in society, and should not be liable for any punishment. The primary offenders under this Act should be the owners of such clinics, and the doctors who conduct and profit from sex-determination tests. (3) These diagnostic tests should be restricted to the Government sector hospitals. (4) Local Vigilance Committees to be set up for monitoring, and these are to be representative bodies

1) 'Ankur' – J. Shrivastava
2) SAHELI – Lakshmi Murthy
3) FORUM AGAINST SEX DETERMINATION AND SEX PRESELECTION (BOMBAY) Sandhya Gokhale
4) MAHILA SAMOOH, AJMER Arti Sawhny
5) JOINT WOMEN'S PROGRAMME — Vinita
6) ABVA. [illegible]

PRE NATAL DIAGNOSTIC TECHNIQUES (REGULATION AND PREVENTION OF MISUSE) BILL OF ~~XXXX~~ 1991

Information gathered on the day of submitting the memorandum to the President.

President's Office claimed that the Bill had not yet reachd for his assent. They siggested that it may be at the Law Ministry.

The Law Ministry, when contacted, said that they only keep Bills for a couple of days, to check spelling mistakes, and whether any of the provisions contravene the Constitution or any existing law. They said the PND Bill had not yet reached their office .

Law Ministry (a section Officer in the Legislative Dept.) pointed out that the Bill will not become effective ~~xxxxxx~~ even after Presidential assent, unless it appears in the Official Gazzette.

Before the Act can appear in the Official Gazzatte, it will be sent to the Ministry of Health and F W, which has to ensure an infrastructure for enforcement of the Act. Law Ministry also said that many laws fail to become full Acts because this part ie. infrastructure arrangement is not completed.

27-8-94
Saheli,
Delhi

प्रेस विज्ञप्ति

माँके पेटमें पलते हुए गर्भके लिंगका पता लगाकर भ्रूणहत्या करनेके आज नाना प्रकारकी उन्नत वैज्ञानिक तकनीकोंका दुरुपयोग बड़े पैमाने पर हो रहा है। इन तकनीकोंमें शामिल है - एम्नियोसेंटेसीस, कोरियोन-विलाय बायोप्सी, फिटोस्कोपी, अल्ट्रासाऊंड, नीडलींग इत्यादि। गर्भजल परीक्षण करके जन्मनेसे पहले ही बेटियोंकी हत्या कर देनेकी साजिशने व्यापक रूप धारण कर एक चिंताजनक स्थिति पैदा कर दी है। यह बहुत ही दुःखकी बात है कि एक और हमारी केंद्रीय सरकार महिलाओंके विकासमें कोई कसर न बाकी रहने देनेकी बात करती है पर साथ ही साथ गर्भलिंग परीक्षण व लिंगचुनावकी विधियोंके दुरुपयोगको रोकनेके लिए कोई कदम नहीं उठा रही जिससे समस्त नारीजातिके लिए नए खतरे खड़े हो रहे हैं। आज स्थिति यहाँ तक आ पहुँची है कि भारतीय नारीयोंका जीवित रह पाना ही सम्भव नहीं रह जाएगा। क्यों कि मौजूदा अत्याचारोंके साथ जिनमें बालिकाओंकी हत्या, विधवादहन, दहेजहत्या, पारिवारिक व अन्य अत्याचारोंमें अब भ्रूणहत्याकी परंपरा भी शामिल की जा रही है।

दिल्ली व बंबई गर्भलिंगपरीक्षणके बड़े केंद्र हैं पर इसका मतलब यह नहीं कि एम्नियोसेन्टेसीसकी सुविधाएँ इन महानगरों तक

ही सीमित है। इन परीक्षणकी सुविधाएँ गाँवो व कसबों तक फैल गई है। इसका व्यापक इस्तमाल तकरीबन हर प्रांतमे हो रहा है। नारी व जन स्वास्थ्य आंदोलनमें इन घृणास्पद तकनीकके फैलावको रोकनेके लिए महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब, कर्नाटक, तामिलनाडू, गोवा, दिल्ली तथा चंदीगढ़में गर्भलिंग चुनाव विरोधी मंचोका गठन किया है। जनवादी महिला समिति, सहेली, ज्वाईंट विमेन्स प्रोग्राम, नेशनल फेडरेशन ऑफ इन्डियन विमेन, वालंटरी हेल्थ एसोसियेशन ओफ इंडिया, बंधुआ मजदूर मुक्ति मोर्चा, यंग विमेन्स क्रिश्चियन एसोसियेशन, एक्शन इंडिया, काली फोर विमेन, जागोरी, शक्ति शालिनी, महिला दक्षता समिति, अंकुर, वालंटरी हेल्थ एसोसिएशन (दिल्ली), ने गर्भलिंग जाँच व लिंगचुनाव विरोधी मंच गठित किया है।

व्यापक जनआंदोलनसे प्रभावित होकर महाराष्ट्र सरकारने १९८८ मे लिंगजाँचके नियमनके लिए कानून गठित किया था। इस कानूनमें काफी कमियाँ है व साथ ही एक प्रदेशभरमे कानून बन जानेसे दुरुपयोगमें कोई कमी नही आई क्योंकि बाकी सब प्रांतोमें स्थिति यथावत है व सुविधाएँ प्राप्त करनेके लिए सिर्फ दूसरे प्रांतोमें जाना जरूरी है। इस लिए राष्ट्रीय स्तर पर विरोध अभियान आज २४-११-८८ के दिन गर्भ-लिंगजाँच और लिंगचुनाव विरोधी दिवस मनाकर छेडा जा रहा है। राष्ट्रीय स्तर पर

हमारी यह माँग है कि केंद्रीय सरकार स्त्री भ्रूण हत्याको रोकनेके लिए सक्षम कानून बनाए जिसमें निम्नलिखित बातों पर विशेष ध्यान दिया जाय:

क) कानूनकी पहुँच महाराष्ट्रके कानूनसे बड़ी होनी चाहिये व इसके द्वारा न सिर्फ मौजूदा तकनीकोंका नियमन होना चाहिये वरन् इसमें अपने आप ही भविष्यमें विकसित होने वाली सभी तकनीकों पर लागू होनेकी क्षमता भी होनी चाहिये।

ख) भ्रूणजाँच सिर्फ जन्मजात विकृतियोंका पता लगानेके लिए ही की जानी चाहिये। जिन विशिष्ट केसोंमें भ्रूणका लिंग पता करना आवश्यक भी हो, उसे, किसीको बताना अपराध होना चाहिये। साथ ही इन सुविधाओंको सिर्फ सरकारी अस्पतालोंमें उपलब्ध होना चाहिये व निजी क्षेत्रमे ये तकनीकोंकी उपलब्धि पर पूर्ण प्रतिबंध लगना चाहिये।

ग) इस कानून पर अमलीकरणके प्रावधानोंको सुचारु रूपसे गठित करना आवश्यक है ताकि यह सिर्फ कागज़ी कानून बनकर न रह जाए। इसके लिए यह जरूरी है कि नारीसंगठनों व समस्त चिंतित व्यक्तियों व संगठनोंको संबंध जानकारी मुहैया करानेका प्रावधान हो ताकि वे कार्यान्वयमें समुचित भूमिका अदा कर सकें।

घ) कानूनमे इस बातका पूरा ध्यान रखा जाय कि औरतें अपने दोयम दर्जेके कारण इन

---४

परीक्षणोंको करवाने पर मजबूर होती हैं इसलिए उन्हें पीड़िता समझा जाए, अपराधी नहीं।

3) इस कानूनको पूरे देश पर लागू किया जाय व इस विषयमें बने प्रांतीय कानूनोंको केंद्रीय कानूनके बन जाने पर रद्द माना जाय।

अपनी इस माँगके समर्थनमें अब तक देशके कोने कोनेसे 5000 हस्ताक्षर एकत्रित किए जा चुके हैं। इन पद्धतियोंके दुरुपयोगका विरोध करनेवालोंमें डाक्टर, वकील, सांसद, शोधकर्ता, कलाकार, वैज्ञानिक, छात्र-छात्राएँ, पत्रकार, शिक्षाशास्त्री सभी शामिल हैं।

संयुक्त राष्ट्रसंघके मानव अधिकार दिवस 10 दिसंबर 1988 को ये हस्ताक्षर प्रधानमंत्री को दिये जाएँगे। राष्ट्रीय स्तर पर अभियान चलाकर जनदबाव द्वारा इस घृणित प्रथाको रोकना इस मंचका उद्देश्य है।

लिंग-जाँच व लिंगचुनाव विरोधी मंच (अखिल भारतीय)

नहीं मानेंगे हम
लड़की ना लड़के से कम

FORUM AGAINST
SEX DETERMINATION AND SEX PRE-SELECTION
लिंग चिकित्सा और लिंग चुनाव विरोधी मंच

C/o Women's Centre, B-104 Sunrise Apts., Above Canara Bank,
Vakola, Santacruz (E), Bombay 400 055. Phone : 6140403

नारीकेंद्र, १०४, 'बी' ब्लाक, सनराइझ एपार्टमेंटस, नेहरू रोड,
सांताक्रूझ (पूर्व) मुंबई-४०००५५. फोन : ६१४०४०३

PRESS RELEASE

The Maharashtra Regulation of Prenatal Diagnostic Techniques Act, 1988, passed with much fanfare remained on paper for the last eight months thanks to the inordinate delay in appointing the implementing bodies by the Government. At least, after sustained efforts by compaigners and vigilant follow up by the press, the State Government, through its Notification published on January 2, 1989, has appointed the two key bodies - The State Appropriate Authority (SAA) and the State Vigilance Committee (SVG). The very fact that the public has not been informed of the constitution of these committees raises doubts about the Government's intentions.

These doubts are further confirmed when we look at the constuction of the bodies. The most disturbing inclusion is that of a genetecist known for her role in the "sex determination business". She has consistently pleaded before the Government and the Press that she has only been concerned with the detection of genetic abnormalities. However, her own paper, presented at International Conferences reveals that 971 out of 1500 cases of chorionic - villus sampling performed by her, were for detecting sex for "non-genetic reasons (anxious couple)". She has been known to have continued performing these tests solely for sex determination even after the enactment of the Act banning these practices, a fact confirmed by a report published in Mid Day.

The Government has exposed itself by appointing such a person in the SVC. It has also given grounds for doubting the nature of the whole committee. Moreover,

while we do not wish to comment on the professional competence of the committee members, we are concerned that none of them have, to the best of our knowledge, taken a clear public stand on this issue. Inspite of the fact that all the non-Government Committees Members are medical professionals none of them have taken a stand on this issue even in the context of medical ethics.

Further, although the Government has constantly maintained that this is a social issue and also accepted that it has been investigated and analysed mainly by non-medicos, these very people - the social scientists and activists are conspicuous by their absence from the committees.

The Forum condemns the Government of Maharashtra for this act which amounts to sabotaging the very objective of the law. We also resolve to intensify our struggle against all forces trying to protect the inhuman, unethical and illegal practice of female foeticide through sex determination.

प्रेस विज्ञप्ति

माँके पेटमें पलते हुए गर्भके लिंगका पता लगाकर भ्रूणहत्या करनेके आज नाना प्रकारकी उन्नत वैज्ञानिक तकनीकोंका दुरुपयोग बडे पैमाने पर हो रहा है। इन तकनीकोंमें शामिल है - एम्नियोसेंटेसीस, कोरियोन-विलाय बायोप्सी, फिटोस्कोपी, अल्ट्रासाऊंड, नीडलींग इत्यादि। गर्भजल परीक्षण करके जन्मनेसे पहले ही बेटियोंकी हत्या कर देनेकी साजिशने व्यापक रूप धारण कर एक चिंताजनक स्थिति पैदा कर दी है। यह बहुत ही दुःखकी बात है कि एक और हमारी केंद्रीय सरकार महिलाओंके विकासमें कोई कसर न बाकी रहने देनेकी बात करती है पर साथ ही साथ गर्भलिंग परीक्षण व लिंगचुनावकी विधियोंके दुरुपयोगको रोकनेके लिए कोई कदम नहीं उठा रही जिससे समस्त नारीजातिके लिए नए खतरे खडे हो रहे हैं। आज स्थिति यहाँ तक आ पहुँची है कि भारतीय नारीयोंका जीवित रह पाना ही सम्भव नहीं रह जाएगा क्यों कि मौजूदा अत्याचारोंके साथ जिनमें बालिकाओंकी हत्या, विधवादहन, दहेजहत्या, पारिवारिक व अन्य अत्याचारोंमे अब भ्रूणहत्याकी परंपरा भी शामिल की जा रही है।

दिल्ली व बंबई गर्भलिंगपरीक्षणके बडे केंद्र हैं पर इसका मतलब यह नहीं कि एम्नियोसेन्टेसीसकी सुविधाएँ इन महानगरों तक

---2

ही सीमित है। इन परीक्षणकी सुविधाएँ गाँवो व कसबों तक फैल गई है। इसका व्यापक इस्तेमाल तकरीबन हर प्रांतमे हो रहा है। नारी व जन स्वास्थ्य आंदोलनमें इन घृणास्पद तकनीकके फैलावको रोकनेके लिए महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब, कर्नाटक, तामिलनाडू, गोवा, दिल्ली तथा चंदीगढ़में गर्भलिंग चुनाव विरोधी मंचोका गठन किया है। जनवादी महिला समिति, सहेली, ज्वाइंट विमेन्स प्रोग्राम, नेशनल फेडरेशन ऑफ इन्डियन विमेन, वालंटरी हेल्थ एसोसियेशन ओफ इंडिया, बंधुआ मजदूर मुक्ति मोर्चा, यंग विमेन्स क्रिश्चियन एसोसियेशन, एक्शन इंडिया, काली फोर विमेन, जागोरी, शक्ति शालिनी, महिला दक्षता समिति, अंकुर, वालंटरी हेल्थ एसोसिएशन (दिल्ली), ने गर्भलिंगजाँच व लिंगचुनाव विरोधी मंच गठित किया है।

व्यापक जनआंदोलनसे प्रभावित होकर महाराष्ट्र सरकारने १९८६ मे लिंगजाँचके नियमनके लिए कानून गठित किया था। इस कानूनमे काफी कमियाँ है व साथ ही उक्त प्रदेशभरमे कानून बन जानेसे दुरुपयोगमें कोई कमी नही आई क्योंकि बाकी सब प्रांतोमे स्थिति यथावत है व सुविधाएँ प्राप्त करनेके लिए सिर्फ दूसरे प्रांतोमें जाना जरूरी है। इस लिए राष्ट्रीय स्तर पर विरोध अभियान आज २४-११-८८ के दिन गर्भ-लिंगजाँच और लिंगचुनाव विरोधी दिवस मनाकर छेड़ा जा रहा है। राष्ट्रीय स्तर पर

--- ३

हमारी यह माँग है कि केंद्रीय सरकार स्त्री भ्रूण हत्याको रोकनेके लिए सक्षम कानून बनाए जिसमें निम्नलिखित बातों पर विशेष ध्यान दिया जाय:

क) कानूनकी पहुँच महाराष्ट्रके कानूनसे बड़ी होनी चाहिये व इसके द्वारा न सिर्फ मौजूदा तकनीकोंका नियमन होना चाहिये वरन् इसमें अपने आप ही भविष्यमें विकसित होने वाली सभी तकनीकों पर लागू होनेकी क्षमता भी होनी चाहिये।

ख) भ्रूणजाँच सिर्फ जन्मजात विकृतियोंका पता लगानेके लिए ही की जानी चाहिये। जिन विशिष्ट केसोंमें भ्रूणका लिंग पता करना आवश्यक भी हो, उसे, किसीको बताना अपराध होना चाहिये। साथ ही इन सुविधाओंको सिर्फ सरकारी अस्पतालोंमें उपलब्ध होना चाहिये व निजी क्षेत्रमे ये तकनीकोंकी उपलब्धि पर पूर्ण प्रतिबंध लगना चाहिये।

ग) इस कानून पर अमलीकरणके प्रावधानोंको सुचारु रूपसे गठित करना आवश्यक है ताकि यह सिर्फ कागज़ी कानून बनकर न रह जाए। इसके लिए यह जरूरी है कि नारीसंगठनों व समस्त चिंतित व्यक्तियों व संगठनोंको संबंधित जानकारी मुहैया करानेका प्रावधान हो ताकि वे कार्यान्वयमे समुचित भूमिका अदा कर सकें।

घ) कानूनमें इस बातका पूरा ध्यान रखा जाय कि औरतें अपने दोयम दर्जेके कारण इन

परीक्षणोंको करवाने पर मजबूर होती हैं इसलिए उन्हें पीडितां समझा जाए, अपराधी नहीं।
३) इस कानूनको पूरे देश पर लागू किया जाय व इस विषयमें बने प्रांतीय कानूनोंको केंद्रीय कानूनके बन जाने पर रद्द माना जाय।

अपनी इस माँगके समर्थनमें अब तक देशके कोने कोनेसे 5000 हस्ताक्षर एकत्रित किए जा चुके हैं। इन पध्धतियोंके दुरुपयोगका विरोध करनेवालोंमें डाक्टर, वकील, सांसद, शोधकर्ता, कलाकार, वैज्ञानिक, छात्र-छात्राएँ, पत्रकार, शिक्षाशास्त्री सभी शामिल हैं।

संयुक्त राष्ट्रसंघके मानव अधिकार दिवस 10 दिसंबर 1988 को ये हस्ताक्षर प्रधानमंत्री को दिये जाएँगे। राष्ट्रीय स्तर पर अभियान चलाकर जनदबाव द्वारा इस घृणित प्रथाको रोकना इस मंचका उद्देश्य है।

लिंग-जाँच व लिंग-चुनाव विरोधी मंच (अखिल भारतीय)

PRESS RELEASE

Abuse of advanced scientific techniques such as amniocentesis, chorion villi biopsy, fetoscopy, needling, ultra-sound, sonography and sex-preselectoon techniques for sex-selective abortion of female foetus has taken on an alarmi alarming trend. The increasing popularity of these techniques for female-foeticide is a cause for grave concern. It is a matter of deep regret that inspite of much "concern" expressed by the government towards "women's development", very little is being done to stopp the dangerous implications of these new techniques of femicide (sex-determination and sex-preselection). The continued use of these tests for femicide indicate that the very survival of Indian women is at stake. Through this test, a new dimension is being added to the increasing atrocities againsy women -- infanticide, discriminati in the family, suicides due to dowry, dowry-murder, widow burning rape etc.

The major centres for sex-determination tests are in Delhi and Bombay; techniques of amniocentesis are gaining popularity even in other urban and rural areas of Gujrat, Maharashtra, Madhya Pradesh, Uttar Pradesh, Haryana Punjab and Goa. In view of this, 13 organisations -- Joint Women's Programme, Janwadi Mahila Samiti, National Federation of Indian Women, Saheli, Bandhua Mazdoor Morcha, Voluntary Health Association of India, Young Women's Christian Association, Action India, Ankur, Jagori, Shaktishalini, Kali for Women and Mahila Dakshita Samiti -- have come together to form the Forum Against Sex-Determination and Sex-Preselection. Several other states such as Gujrat, Maharashtra, Goa, Punjab, Karnataka and Tamil Nadu already have state-level Fora. Today, 24.11.88, is being observed as a national protest day all over these states at the initiatives of these fora.

The Forum against sex-determination and sex-preselection demands that the government pass a central legislation which should include the following points:

1. Widen the scope of the Act to regulate the use of all future techniques for sex-selection/sex-determination.
2. Restrict pre-natal tests (such as amniocentesis) for detection of genetic abnormalities only. In the very limited cases where the sex of the child needs to be determined, this should be restricted to th government medical sector and be banned completely from the private sector.
3. Strengthen the implementing mechanism so that the Act does not remain merely a paper legislation. Women's organisations and other concerned groups and individuals should have access to relevant information to enable them to monitor the implementation of the Act.

4. The legislation should take into account the fact that women are pressurrized into undergoing such tests and therefore they should be viewed as victims rather than culprits.
5. The central legislation should apply all over India and should supersede the acts passed by the State Governments in this regard.

In support of the demand for a central legislation, 5000 signatures have been collected from people of different walks of life --doctors, lawyers, parliamentarians, researchers, scientists, educationists and journalists. The signatures will be presented to the Prime Minister on 10.12.88. The Forum aims to launch a consistent campaign at national level to build up public pressure against this heinous practice.

Forum Against Sex-Determination and Sex-Preselection

24.11.88.

PEOPLE WHO ATTENDED PRESS CONFERENCE ON 24/11/88

NAME	NEWSPAPER ORGANIZATION/ADDRESS	TEL. NO IF ANY
Javed Ansari	Free Press Journal INS Bldg.	
Ayesha Abraham.	153 Kaka Nagar - ND-3.	619520.
VISWAPRIYA.	writer. B-4/30 Safdarjung Enclave New Delhi - 110029	608623.
SUMIT	Jansatta	3319150
Suchita Behal	The Hindu	381823
[illegible]	[illegible]	3378923
Gargi Parsai	The Hindustan Times	3316517
Nirmala George	PTI	336622
AMBIKA NAIR	PTI	"
SEEMA PAUL	Telegraph	383058.
[illegible]		
Reena Banerjee	Shakti Shili 3/42 Jangpura B. New Delhi	
Nilanjana Biswas	D/36, Press Enclave Delhi	
Sarvesh Sohini	Saheli, Defence colony Delhi	616485
RITU MENON	KALI FOR WOMEN	6440245 6436597
MANISHA CHAUDHRY.	KALI FOR WOMEN	6440245/6440362
P BABURAJ	MEDIA COLLECTIVE JYOTSNA, THIRUMALA TVM-6, KERALA	61284
E. DEENADAYALAN	C. E. C.	624874.
K.P. Sasi	K-39, Green Park, New Delhi - 110016	
Venu V.	Medical College Calicut	

NAME	ORGANIZATION NEWSPAPER / ADDRESS	TEL. NO. IF ANY
Sunit Narula	The Times of India	3318143
Amrita Talika	B-8, Friends Colony (West) New Delhi - 110065	631019
Arun Bedan	CENDIT	6439692, 93
Awadhesh Bharti	CENDIT	"
Shehla Khan	Ankur Society	661473.
Sanjini	Jagori B-5, Housing Coop. NDSE-Part I	619510
Paola Bacchetta	c/o Uppal F 1 Nizamuddin West ND 110-013	699477
Rukmini Rao	Saheli	616485.
Marit Berggrav	NORAD	605003
Signun Mogedal	-"-	-"-
SHOBHNA JAIN	UNIVARTA	389417
Parul Chandra	The Statesman	3315641
Usha Rai	Times of India	3318852
Mrs Thing	VHAI	668071/72
Sudhesh	VHAI	" "
Jyotsna Chatterji	Joint Womens Programme	619821
Vimla Farooqui	National Federation of Indian Women	Ansal Bhawan 331954
Sahba Husain	Janwadi Mahila Samiti	S Husain 386906
Nilika	Deptt. of Anthropology Delhi Univ.	[illegible] 5455364
Kirti	— do —	Kirti — —
SATHYA	F-20 Jangpura Extn N Delhi 110014	624824

4.00 — ~~Film~~ — ~~4.30.~~
Briefing
4.30 Screen Film.

Zerox

Report of Baroda Group ✓
Highlights of Bombay Report ✓
Maharashtra Bill
Private Members Bill
+ ~~[illegible]~~.

no mike
make list of [illegible].
✓ newspaper cuttings.

1) Issue
2) Want
~~[illegible]~~
— Forums Report.
— Future.

1) Study
2) Newspapers
3) Ongoing publicity of issue among women.
4) National Convention.
5) ~~Science~~ policies..

Indian Express 5/11/88 p 12.

Bill to ban pre-birth Sex test introduced

New Delhi Nov 4 (PTI) - A bill to ban pre birth sex determination tests was among the 17 private members bills introduced in the Lok Sabha on Friday.

The Statement of objects & reasons of the "Banning of sex determination Test Bill 1988" introduced by a Congress (I) member, Mrs Basavarajeswari said the tests were now increasingly being used by parents & medical practitioners for aborting the female foetus.

IH

Politics

ANNEXURE FL
Copy

189

To,

The GB, Raja Authority of Village

Marm Khullen Khulkpa Sakhai

PHYSICAL PRESENCE OF VILLAGERS

1. You are hereby directed to inform that 20 male members from each village to be physically present at Bn HQ 21 Assam Rifles Jwalamukhi (Lairouching) on 17.9. 1987 at 0700 hours alongwith ~~'KARANG'~~ Kotii KARA and polything/plastic papers for covering.

2. They will also be instructed to make their own arrangement for their lunch. They will fully prepare to lift rations from ~~this location to Oinam.~~ Marm Polic Campto Oinam

To,

The GB, Raja Authority of Village

MARAM KHULLEN KHULAKPA SAKHAI

PHYSICAL PRESENCE OF VILLAGERS

1. You are hereby directed to inform that 20 male members from each village to be physically present at Bn HQ 21 Assam Rifles Jwalamukhi (Lairouching) on 21-9 1987 at 0700 hours alongwith KARANG and polything/plastic papers for covering.

2. They will also be instructed to make their own arrangement for their lunch. They will fully prepare to lift rations from this location to Oinam.